Chap-5

पंचम अध्याय

उपसंहार

अध्याय-५

उपसंहार :--

साहित्य की अन्य विधाओं जैसे कहानी, उपन्यास, नाटक, काव्य, रिपोतार्ज, डायरी, आलोचना आदि में "नाटक" का अपना एक विशिष्ट महत्व है। संस्कृत के रूपक से शुरू होकर बाद में नाट्यरूप में परिवर्तित इस विधा को संस्कृत तथा हिन्दी नाटककारों ने अपने-अपने ढंग से व्याख्यायित किया।

साहित्य की प्रमुख विधा के रूप में नाट्य साहित्य का एक विशिष्ट स्थान है साथ ही साथ ऐतिहासिक नाटक भी अपने-आपमें साहित्य पर एक विशिष्ट छाप छोड़े हुए है। संस्कृत में भास तथा हिन्दी में भारतेन्दु से ऐतिहासिक नाअक का प्रारंभ माना जाता है। ऐतिहासिक नाटक की इस लम्बी परम्परा में ऐतिहासिक नाटककारों ने महत्त्वपूर्ण योगदान देकर इस परम्परा को आगे बढ़ाया। ऐतिहासिक नाटककार पात्रों एवं ऐतिहासिक घटना के माध्यम से, वातावरण एवं भाषा -विधान के माध्यम से रचना को सशक्त रूप में संप्रेषित करने का प्रयत्न करता है। जिस प्रकार नाटक संस्कृत से हिन्दी में अनूदित होकर आया उसी प्रकार ऐतिहासिक नाटक भी संस्कृत नाटकों के फलस्वरूप ही हिन्दी में अवतरित हुए। प्रसाद आदि के समस्त एतिहासिक नाटक संस्कृत के ऐतिहासिक नाटक की शैली पर चलें हैं, इसलिए संस्कृत के ऐतिहासिक नाटकों को हिन्दी के ऐतिहासिक नाटक का जनक माना जा सकता है। नाटककारों ने एतिहासिक नाटक लिखते समय इतिहास से संबंधित समस्त घटनाओं का समावेश अपनी कृतियों में किया है। इससे

इतना तो स्पष्ट हो ही जाता है कि ऐतिहासिक नाअककारों के ऐतिहासिक नाटक, ऐतिहासिक घटनाओं एवं वातावरण आदि के माध्यम से संप्रेषित होने वाला एक नाट्यशिल्प है । संस्कृत में भास, कालिदास, शूद्रक, विशाखदत्त आदि ने ऐतिहासिक नाटकों में तत्युगीन समस्याओं को उभारने का प्रयत्न किया है वहीं दूसरी ओर भारतेन्दु, प्रसाद, प्रेमी आदि हिन्दी के इतिहासिक नाटककारों ने भी अपने नाटकों में तत्युगीन समस्या को अपने ढंग से व्याख्यायित करने का प्रयास किया है ।

संस्कृत के ऐतिहासिक नाटकों के अध्ययन से इतना स्पष्ट हो जाता है कि संस्कृत में ऐतिहासिक नाटकों का ज्यादा अभाव नहीं है । संस्कृत के ऐतिहासिक नाटकों की उपादेयता न सिर्फ सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक दृष्टि से प्रतीत होती है अपितु अन्य भाषा के नाटकों में भी यह उसी रूपों में दृष्टिगत होती है । भास, कालिदास, विशाखदत्त आदि संस्कृत के ऐतिहासिक नाटककारों द्वारा लब्धप्रतिष्ठित लेखनी से बद्ध किये जाने के कारण उनकी नाट्यकला सुदीर्घ काल से समालोचनों के निकष पर खरी उतरती देखी जा रही है । यही कारण है कि आज भी उनकी उत्कृष्टता सर्वमान्य है । भास का प्रतिज्ञा यौगंधरायण तथा स्वप्नवासवदत्तम् , कालिदास का मालविका अग्निमित्रम् , शूद्रक का मृच्छकटिकम् एवं विशाखदत्त का मुद्राराक्षस तत्युगीन संस्कृत नाट्यसाहित्य की प्रतिनिधि रचनाएँ हैं और इसमें ऐतिहासिकता तथा सर्जनात्मक प्रतिभा का पूर्ण निवाड हआ है । संस्कृत के ऐतिहासिक नाटक के मुख्य तीन प्रकार हैं --राजनैतिक, सांस्कृतिक एवं रोमटिक या प्रणय प्रधान ।

प्रतिज्ञा यौगन्धरायण, मुद्राराक्षस एवं हम्मीर मर्दन आदि नाटक

जहाँ एक ओर राजनैतिक पक्ष को उद्घाटित करते हैं वही दूसरी ओर मृच्छकटिकं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर निर्मित नाटक दिखायी देता है। कुछ परवर्ती ऐतिहासिक नाटककारों ने भी अपने नाटकों में इस शैली का अनुकरण किया है लेकिन वे सफल नहीं हो पाये हैं। इसका कारण यह है कि उन नाटकों पर इतिहास का आरोप प्रतीत होता दिखाई देता है। मध्यकालीन नाट्य कला समसामयिक यथार्थ के प्रतिबिम्ब में सर्वथा सफल होती हुई देखी जाती है और इन नाटकों में कल्पना तथा इतिहास तत्व का प्राचुर्य देखा जाता है। हम्मीर मर्दन नाटक में ऐतिहासिकता के साथ-साथ पात्रों की सक्रीयता, अन्तर्द्वन्द्व षडयंत्र, राजनैतिक गतिविध इत्यादि के कारण ऐतिहासिकता पूर्णरूप से दिखाई देती है।

संस्कृत के ऐतिहासिक नाटक ज्यादातर रंगमंच की दृष्टि से निर्मित हुए थे जबकि इन नाटकों में कल्पना की प्रचुरता देखी जाती है। कौमुदी महोत्सव इत्यादि नाटक देवीपूजन, राज्याभिषेक, या अन्य उत्सवों पर मंदिरों या राज्यसभा में इन नाटकों का अभिनय होता हुआ अवश्य देखा जाता है। वैसे ऐतिहासिक नाटकों में कल्पना का सफल प्रयोग इतिहास को आत्मसात करने पर ही होता है लेकिन संस्कृत में ऐसे नाटकों की संख्या हम फ प्रतिज्ञा यौगन्धरायणं, स्वप्नवासवदत्तम, मालविकाग्निमित्रम, मृच्छकटिकम् आदि नाटकों को संस्कृत ऐतिहासिक नाटकों का प्रतिमान कहा जा सकता है। संस्कृत के ऐतिहासिक नाटकों के ऐतिहासिक महत्त्व, उसकी रचना प्रक्रिया रसात्मकता, कथ्य एवं शिल्पादि के कारण समसामयिक प्रेक्षकवर्ग या पाठक वर्ग की रूचि से भी पूर्णरूपेण जुड़ा हुआ देखा जाता है।

संस्कृत के ऐतिहासि नाटक के मुख्य तीन प्रकार देखे जाते हैं

-- पात्र प्रधान, घटना प्रधान तथा रस प्रधान। वैसे तो नाट्य रचना में सभी तत्व का सक्रिय होना स्वाभाविक है , लेकिन घटना प्रधान ऐतिहासिक रचना ही ऐतिहासिक नाटक के रूप में देखी जाती है ।

हिन्दी की नाट्य-परंपरा ही संस्कृत नाट्य-साहित्य की देन है । यह परंपरा हिन्दी के ऐतिहासिक नाटकों में परिलक्षित होती है । हिन्दी के समस्त ऐतिहासिक नाटकों में ऐतिहासिकता का पूर्ण प्रभाव दृष्टिगत होता है । प्रसाद के संपूर्ण नाटक संस्कृत के ऐतिहासिक नाटकों को आधार बनाकर लिखे गये हैं । इसलिए नाट्यकला की जो विशेषता हमें संस्कृत के ऐतिहासिक नाटकों में परिलक्षित होती दिखाई देती है उसका पूर्ण प्रभाव हिन्दी के ऐतिहासिक नाटकों में दिखना स्वाभाविक है । हिन्दी में ऐतिहासिक नाटक की सर्वप्रथम रचना भारतेन्दु रचित नीलदेवी मानी जाती है । तत्पश्चात् प्रसादादि ने ऐतिहासिक नाटकों की रचना ऐतिहासिक वातावरण , ऐतिहासिक घटना तथा इतिहास तत्त्वों के आधार पर की । डॉ. धनंजय ने ऐतिहासिक नाटकों की संख्या १७४ बताते हुए मात्र चन्द्रगुप्त, स्कंदगुप्त, अजातशत्रु, ध्रुवस्वामिनी एवं वितस्ता की लहरें नाटक को ही विशुद्ध ऐतिहासिक नाटक स्वीकार किया है । जिसका समावेश मैंने अपने शोध-प्रबंध में किया है । संस्कृत के ऐतिहासिक नाटकों की भाँति ही प्रसादादि के ऐतिहासिक नाटक आज भी उतने ही महत्त्वपूर्ण हैं जितने तत्युगीन समाज की दृष्टि में थे ।

प्रसादादि ने स्कंदगुप्त, चंद्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी, अजातशत्रु,एवं वितस्ता की लहरें आदि ऐतिहासिक नाटकों की रचना न केवल ऐतिहासिकता के किसी एक पहलू पर दृष्टिपात करके किया है बल्कि ऐतिहासिक घटना; वातावरण, पात्र इत्यादि को भी समाहित

किया है । चंद्रगुप्त आदि नाटकों के पात्र, घटनाएँ, समय आदि पूर्णरूप से ऐतिहासिक ही हैं । रंगमंच की दृष्टि से भी ये सभी नाटक तत्युगीन समाज के लिए भी उपयोगी थे और आधुनिक युग में भी । यही उपयोगिता और जीवंतता ही रचनाओं एवं रचना-ग्रंथों की सार्थकता को सिद्ध करती है ।

संस्कृत और हिन्दी दोनों ऐतिहासिक नाट्यसाहित्यों में जहाँ तमाम समानताएँ दिखाई देती हैं वहीं भिन्नताएँ भी दृष्टिगत होती हैं, अतएव उन भिन्नताओं को भी तुलनात्मक अध्ययन के दायरे में रहकर उद्घाटित करने का यथासंभव प्रयास किया गया है । इस अध्ययन में साम्यपक्ष पर अधिक बल दिया गया है । इस प्रकार शोधप्रबंध को मौलिक , सार्थक , जीवंत एवं उपयोगी बनाने का हरसंभव प्रयास किया गया है ।